जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म–दर्शन

M.A. Jainology Comparative Religion and Philosophy

(MJCRPD)

परीक्षा की रूपरेखा

इसमें कुल आठ प्रश्न पत्र होंगे। चार एम.ए. पूर्वार्द्ध में और चार एम.ए. उत्तरार्द्ध में। सभी प्रश्न पत्र अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र में 70 अंक वार्षिक परीक्षा एवं 30 अंक सत्रीय कार्य के होंगे।

एम.ए. पूर्वार्द्ध	सतत मूल्यांकन / प्रश्न पत्र	पूर्णांक	अवधि
1. जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
2. जैन तत्त्व मीमांसा एवं आचार मीमांसा	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
3. ध्यान, योग एवं कर्म मीमांसा	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
4. जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
योग	32 श्रेयांक	**400**	

एम.ए. उत्तरार्द्ध	प्रश्न पत्र	पूर्णांक	अवधि
5. जैन आगम	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
6. अनेकान्त, नय,निक्षेप और स्याद्वाद	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
7. जैन धर्म–दर्शन और भारतीय धर्म–दर्शन	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
8. जैन धर्म–दर्शन और भारतीयेतर धर्म दर्शन	2+6=8 श्रेयांक	30+70	3 घंटे
योग	**32 श्रेयांक**	**400**	

SCHEME OF EXAMINATIONS (PG)

- PASS CRITERIA: Pass marks - 36% in each theory course & 50% in Practical; and 40% in aggregate
  Promoted - 1. Passing 50% papers of course 2. Not securing Aggregate 40% marks.
- Calculation of Division: First Division – 60% and above; Second Division - 50% to <60%; Pass – 40% to <50%

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)–प्रथम पत्र
जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला
खण्ड क– जैन इतिहास

70+30 अंक

संवर्ग–1

1. प्रागैतिहासिक काल में जैन धर्म (ऋषभ से अरिष्टनेमि तक)
2. पार्श्वनाथ, महावीर
3. महावीर कालीन (अन्य तीर्थिक) विचार धारायें
4. महावीर की गणधर–परम्परा
5. देश–विदेश में जैन धर्म (उत्तर भारत, दक्षिण भारत और विदेशों में जैन धर्म)

संवर्ग–2

6. जैन संस्कृति की विशेषतायें–जातिवाद, व्यसनवर्जन
7. अहिंसक जीवन शैली
8. तीर्थ स्थान
9. कर्मकाण्ड
10. पर्व

संवर्ग–3

11. मूर्तिकला, चित्रकला
12. स्तूप, गुफा, मन्दिर

संवर्ग–4

13. आगम साहित्य
14. आगम व्याख्या साहित्य

संवर्ग–

15. दार्शनिक साहित्य
16. पुराण एवं चरित
17. काव्य एवं कथा साहित्य
18. योग साहित्य

Books Recommended for General Study

1. A History of the Jains-By Ashim Kumar Roy. Pub.-Gitanjali Publishing House, New Delhi.
2. Religion and Culture of the Jainas, Edited By D.C. Sircar Pub. University of Calcutta.

3. The Jaina sources of the History of ancient India by Dr. Jyoti Prasad Jain Pub. Munshiram Manoharlal Delhi-6.
4. Jain Philosophy Historical outlines by Narendra Nati Bhattacharya Pub. Munshiram Manoharlal Delhi.
5. Religion and Culture of Jainas by Dr. Jyoti Prasad Jain Pub. Bhartiya Jnanapith Publication, Delhi.
6. Doctrine of Jainas by W. Schubring MLBD, Delhi.
7. History of Canonical Literature of Jaina by H.P. Kapadia, Bombay.
8. History of Indian Literature : W. Winternitz.
9. जैन दर्शन मनन और मीमांसा–आचार्य महाप्रज्ञ, आदर्श साहित्य सं. चुरू।
10. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान–डॉ. हीरालाल जैन, प्रका. मध्यप्रदेश शासन साहित्य अकादमी, भोपाल।
11. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, प्रका. पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
12. जैन साहित्य का इतिहास–पं. कैलाशचन्द शास्त्री, प्रका. गणेश वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी।
13. जैन दर्शन और संस्कृति– प्रका. जैन विश्व भारती।
14. प्राकृत साहित्य का इतिहास–प्रो. जगदीश चन्द्र जैन प्रका. चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
15. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास–डॉ. भागचन्द भास्कर प्रका.–नागपुर विश्वविद्यालय
16. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य–साध्वी संघमित्रा–प्रका. जैन विश्वभारती, लाडनूं।
17. श्रमण महावीर, आचार्य महाप्रज्ञ, प्रका. जैन विश्व भारती।
18. जैन धर्म–पं. कैलाशचन्द शास्त्री, प्रका. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ चौरासी, मथुरा।
19. भारतीय इतिहासः एक दृष्टि–डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय ज्ञानपीठ
20. उत्तराध्यनः एक समीक्षात्मक अध्ययन, वा. प्र. आचार्य तुलसी विवेचक मुनि नथमल ते. महासभा, कलकत्ता।
21. अतीत का अनावरण मुनि नथमल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
22. अरिष्टनेमि और वासुदेव कृष्ण, श्रीचन्द रामपुरिया, ते. महासभा, कलकत्ता।
23. तीर्थंकर महावीर–पं. पद्म चन्द्र शास्त्री, प्रका. जैन विद्या संस्थान, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी (राज.)
24. जैन पर्व–डॉ. रमेशचन्द्र प्रका. जैन विद्या संस्थान, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी (राज.)

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)–द्वितीय पत्र
जैन तत्त्वमीमांसा एवं आचार मीमांसा
खण्ड क–जैन तत्त्वमीमांसा

70+30 अंक

संवर्ग–1

1. सत् का स्वरूप
2. द्रव्य गुण– पर्याय

भगवई 18/134–142
पंचास्तिकाय गाथा 4–22
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 5/1–6
द्रव्यानुयोग तर्कणा 2/1, 9/1–29
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/1–3

3. द्रव्य गुण पर्याय भेदाभेदवाद

पंचास्तिकाय गाथा 12,13
द्रव्यानुयोग तर्कणा 2/2–3, 3/1–10

संवर्ग–2

4. लोक का स्वरूप

जैन सिद्धान्त दीपिका (प्रथम प्रकाश 1–9)
जैन दर्शन मनन और मीमांसा पृ. 214–233

5. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय

भगवई 2/125, 130–135
पंचास्तिकाय गाथा 83–89
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 5/17
द्रव्यानुयोग तर्कणा 10/4–7
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/4, 5, 32
जैन दर्शन मनन और मीमांसा पृ. 188–191

संवर्ग–3

6. अकाशास्तिकाय

भगवई 2/127
पंचास्तिकायगाथा 90–96
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 5/18
द्रव्यानुयोग तर्कणा 10/8–9
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/6–13

7. काल

पंचास्तिकाय गाथा 100–102
द्रव्यानुयोग तर्कणा 10/10–19
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 5/38–39
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/6–13

संवर्ग–4

8. जीवास्तिकाय (आत्मा)
9. षड्जीवनिकाय
भगवई 2/128
पंचास्तिकाय गाथा 30–32
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 5/21
द्रव्यानुयोग तर्कणा 1/20
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/34, 3/1–18

संवर्ग–5

10. पुद्गलास्तिकाय
भगवई 2/129
पंचास्तिकाय गाथा 74–76
तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य सहित 5/12–20, 23–26
जैन सिद्धान्त दीपिका 1/14–21, 33
11. परमाणु स्वरूप एवं उसकी बन्ध प्रक्रिया
पंचास्तिकाय गाथा 77–78
जैन दर्शन मनन और मीमांसा, पृ. 199–212

खण्ड ख– आचार मीमांसा

संवर्ग–6

12. आचार की जैन अवधारणा तथा उसकी तात्त्विक पृष्ठभूमि
13. जैनाचार के सिद्धान्तों का उद्भव और विकास

संवर्ग–7

14. श्रावकाचार
(क) अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत
(ख) ग्यारह प्रतिमायें
उवासगदसाओ
तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित 7/1, 32
रत्नकरण्ड श्रावकाचार
श्रावकसम्बोध
15. करुणा का महत्त्व और उसके प्रकार
अनुकम्पा की चौपाई 30वां रत्न, भिक्षु ग्रन्थ रत्नाकर

संवर्ग–8

16. श्रमणाचारः पंचमहाव्रत, गुप्ति, समिति
17. षडावष्यक
18. परीषह

आचारांग : द्वितीय श्रुत स्कन्ध
दशवैकालिक 4 / 11–17
मूलाचार 1 / 10–36
तत्त्वार्थसूत्र 9 / 1–46
आचारबोध

संवर्ग–9

19. संघ व्यवस्था

आचार्य महाप्रज्ञ कृत आचारांग भाष्य के निम्न अंश
आचार्य 5 / 89
साधु 3 / 5
दिनचर्या 4 / 40–43
आहार 2 / 113, 8 / 36
जिजिविषा 2 / 63, 64
संघ 5 / 107–110

संवर्ग–10

20. नव तत्त्व

भगवई 1 / 200–201, 7 / 10–15
उत्तराध्ययन 36 / 55–56
तत्त्वार्थसूत्र 10 / 1–7
नव तत्त्व : आधुनिक सन्दर्भ में

21. संलेखना, पण्डित–मरण

आचारांग 6 / 113, 8 / 105–110

पाठ्य पुस्तकें

(क) 1. भगवई भाष्य प्रका. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं ।
2. तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित प्रका. परमश्रुत प्रभावक मण्डल, आगरा।
3. द्रव्यानुयोग तर्कणा प्रका. परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास
4. जैन सिद्धान्त दीपिका, आचार्य तुलसी (अंग्रेजी अनुवाद–एस. मुखर्जी) संपादक डा. नथमल टाटिया, मुनि महेन्द्र कुमार, प्रका. जैन विश्वभारती, लाडनूं
5. जैन दर्शन, मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, प्रका. आदर्श साहित्य संघ चुरू।

(ख) 6. उवासगदसाओ–अंगसुत्ताणि भाग–3, जैन विश्व भारती. लाडनूं
7. तत्त्वार्थसूत्र भाष्य सहित, परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास

8. श्रावकसम्बोध, प्रका. आदर्श साहित्य संघ, चुरू।
9. आचारांग भाष्य–आचार्य महाप्रज्ञ, प्रका. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
10. दशवैकालिक – जैन विश्व भारती, लाडनूं
11. मूलाचार–प्रका. भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
12. रत्नकरण्ड श्रावकाचार–वीरसेवा मन्दिर ट्रस्ट प्रकाशन, वाराणसी
13. आचार बोध–आचार्य तुलसी, आदर्श साहित्य संघ, चुरू ।
14. उत्तराध्ययन–प्रका. जैन विश्वभारती, लाडनूं
15. नवतत्त्वः आधुनिक सन्दर्भ में– आचार्य महाप्रज्ञ प्रका. जैन विश्वभारती, लाडनूं।

Books Recommended For General Study

Group 'A"

1. Illuminator of Jain tenets by Acharya Shri Tulsi, Eng. Translated by S. Mookherjee Pub. JVBI.
2. Reals in the Jain Metaphysics, H.S. Bhattacharya. Seth Shantidas Kheisy Charitable Trust. Bombay.
3. Micro Casmology : Atom in Jain Philosohy and Modern Science by J.S. Zaveri JVBI
4. Cosmology : Old and New-G.R. Jain, Bharatiya Jnanapitha Publication, New Delhi.
5. A comparative study of the Jain Theories of Reality Knowledge by Padmarajah. Pub. MLBD Delhi.
6. Tattvartha Sutra, by Dr. Nathmal Tatia, Haeper Calline London 1984.
7. Concept of Matter in Jain Philosophy. J.C. Sikdar, Pub. PVRI. Varanasi.
8. English Tr. of Panchastikaya by Prof. Chakravarti
9. English Tr. of Brahad Dravyasangrah.

Group 'B"

10. Aspects of Jain Monasticism-Dr. Tatia and Muni Mahendra Kumar, JVBI, Ladnun.
11. Ethical Doctrines of the Jainas by K.C. Sogani, Jain Samskriti Samrakshak Sangh, Sangli, Solapur.
12. Jain Ethics-Dr. Dayanand Bhargava, MLBD Delhi
13. Jain Yoga R. Villiams 14. History of Jaina Monachism-S.B. Deo.

खण्ड – अ

15. विश्व प्रहेलिका–मुनि महेन्द्र कुमार, जैन विश्व भारती, लाडनूं ।

16. जैन दर्शन–प्रो. महेन्द्र कुमार, प्रका. गणेशवर्णी शोध संस्थान, वाराणसी।
17. जैन दर्शन और विज्ञान–मुनि महेन्द्र कुमार, जेठालाल झावेरी प्रका. जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं ।
18. दर्शन और चिन्तन –डा. सुखलाल संघवी
19. अहिंसा तत्त्वदर्शन, प्रका. आदर्श साहित्य संघ चुरू
20. जैन आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री
21. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन, डा. सागरमल जैन, प्रका. प्राकृत भारती, जयपुर।
22. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, प्रका. वीरसेवा मन्दिर, वाराणसी
23. नवपदार्थ संग्रह–आचार्य भिक्षु सं. श्री चन्द्र रामपुरिया, प्रका. जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
24. गृहस्थ को भी अधिकार हैं धर्म करने का, गणाधिपति तुलसी, प्रका. आदर्श साहित्य संघ,चुरू
25. जैन दर्शन मनन और मीमांसा – आचार्य महाप्रज्ञ

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)–तृतीय पत्र
ध्यान योग एवं कर्ममीमांसा

70+30 अंक

संवर्ग–1

1. जैन योग स्वरूप
2. हरिभद्र की योग दृष्टियां
3. ध्यान का स्वरूप एवं भेद, ठाणं 4/60–726
4. सालम्बन ध्यान एवं धारणा (पिण्डस्थ एवं पार्थिवी आदि) मनोनुशासनम्

संवर्ग–2

5. प्रेक्षाध्यान
6. प्रेक्षाध्यान का आगमिक स्रोत
7. द्वादश अनुप्रेक्षा तत्त्वार्थसूत्र 9/14 पर सर्वार्थसिद्धि टीका
8. लेश्या का स्वरूप एवं भेद– उत्तराध्ययन 34 वां अध्ययन

संवर्ग–3

पातंजल योग सूत्र, पाद 1–2

9. योग का स्वरूप
10. सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात समाधि
11. क्रियायोग

12. अष्टांग योग
    विसुद्धिमग्गो, अध्याय तृतीय (समाधि)
13. समाधि की अवधारणा और भेद
14. दसपालिबोध एवं चर्या
15. ध्यान का विषय (कर्मस्थान)

संवर्ग–4

तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य सहित, 8 पण्णवणा 23/1–59
16. कर्म स्वरूप, बन्ध के हेतु एवं प्रक्रिया
17. कर्म के भेद–प्रभेद
18. कर्म की पौद्‌गलिकता एवं कर्म की दस अवस्थाएं
19. आत्मा और कर्म का पारस्परिक सम्बन्ध एवं मुक्ति की प्रक्रिया

संवर्ग–5

20. कर्मवाद और आध्यात्मिक साधना
21. मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में कर्मवाद
22. कर्मवाद और पुनर्जन्म
23. नियतिवाद आदि पांच घटक
24. गुणस्थान

पाठ्यपुस्तकें–

1. आचारांग भाष्य, आचार्य महाप्रज्ञ (जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं)
2. पातंजल योग सूत्र, पाद 1–2
3. विसुद्धिमग्गो, अध्याय तृतीय (समाधि)
4. तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य सहित, 8/1–25 (परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास) जैन दर्शन, मनन और मीमांसा, 301–306 आचार्य महाप्रज्ञ (आदर्श साहित्य संघ, चुरू)
5. जैन सिद्धान्त दीपिका–आचार्य तुलसी, जैन विश्वभारती, लाडनूं।
6. पण्णवणा, 23/1–59 उवंगसुत्ताणि, भाग–2, जैन विश्वभारती, लाडनूं
7. जैन दर्शन मनन और मीमांसा पृ. 306–330

Books Recommened For General Study :

1. Jain Meditation, Chitta Samadhi-Dr. Nathmal Tatia JVB] 1986.
2. Neuroscience of Karma, J.S. Zaveri and Muni Mahendra Kumar JVBI, Ladnun 1972
3. The Doctrine of Karma in Jain Philosophy. H.V. Glassanapp. reprint PVRI, Varanasi, 1992.
4. महावीर की साधना का रहस्य, मुनि नथमल, आदर्श साहित्य संघ, चुरू
5. ध्यान शतक, जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण, प्रका. आदर्श साहित्य संघ, चुरू

6. प्रेक्षा–अनुप्रेक्षा, आचार्य श्री तुलसी, प्रका. आदर्श साहित्य संघ, चुरू
7. जैन योग, अर्हत्दास–पी.वी.आर.आई. वाराणसी
8. प्रेक्षाध्यान : सिद्धान्त और प्रयोग, संपादक–मुनि किशनलाल, जैन विश्वभारती, लाडनूं
10. अमूर्त्त चिन्तन, युवाचार्य महाप्रज्ञ, आदर्श साहित्य संघ, चुरू
11. आभामण्डल, युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं
12. बौद्ध धर्म–दर्शन, आचार्य नरेन्द्र देव, प्रका. बिहार राष्ट्रीय भाषा परिषद् पटना।
13. जैन कर्म सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. सागरमल जैन, प्राकृत भारती, जयपुर।
14. जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्रा पी.वी. आर.आई वाराणसी।
15. जैन कर्म सिद्धान्त और मनोविज्ञान, डॉ. रतनलाल जैन
16. कर्मवाद, आचार्य महाप्रज्ञ, आदर्श साहित्य संघ, चुरू।

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)–चतुर्थ पत्र
जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय

70+30 अंक

संवर्ग–1

1. जैन ज्ञान मीमांसा का उद्भव और विकास
2. ज्ञान और ज्ञेय
3. दर्शन का स्वरूप एवं उसके भेद

संवर्ग–2

4. मति ज्ञान
5. श्रुत ज्ञान
6. इन्द्रिय और मन

संवर्ग–3

7. अवधिज्ञान
8. मनः पर्यवज्ञान
9. केवलज्ञान

संवर्ग–4

10. जैन न्याय का उद्भव एवं विकास
11. भारतीय न्याय के विकास में जैन आचार्यो का योगदान
12. प्रमाण का लक्षण
13. प्रत्यक्ष प्रमाण

संवर्ग–5

14. परोक्ष प्रमाण
    स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, आगम
15. प्रमेय, प्रमिति, प्रमाता
16. अनुमान, व्याप्ति, हेतु स्वरूप

पाठ्यपुस्तकें–

1. नन्दीसूत्र, 2–80 (नवसुत्ताणि, जैन विश्व भारती, लाडनूं)
2. ज्ञान बिन्दु प्रकरण परिचय (प्रस्तावना भाग) पृ. 13–18, 20–25, 40–42 (सिंधी जैन ज्ञान पीठ, अहमदाबाद)
3. प्रमाण–मीमांसा, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद।

Books Recommened For General Study :

1. Studies in Jain Philosophy, Nathmal Tatia PVRI, Varanasi
2. The Jain concept of omniscience, Dr. Ramjee Singh, L.D. Institute, Ahmedabad.
3. Jain Epistemology, I.C. Shastri
4. जैन न्याय,पं. कैलाशचन्द शास्त्री, प्रका. भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
5. जैन दर्शन पं. महेन्द्र कुमार, प्रका. गणेशवर्णी जैन ग्रन्थमाला, बनारस।
6. जैन दर्शन मनन और मीमांसा, मुनि नथमल, प्रका. आदर्श साहित्य संघ, चुरू।
7. जैन न्याय का विकास, मुनि नथमल, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
8. आगम युग का जैन दर्शनः पं. दलसुख मालवणिया प्रका. प्राकृत भारती जयपुर (राज.)
9. प्रवचनसार–परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास।
10. जैन न्याय की भूमिका– डॉ. दरबारीलाल कोठिया, प्रका. जैन विद्या संस्थान, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी।

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

पंचम पत्र –जैन आगम

70+30 अंक

संवर्ग–1: ***आचारांग, प्रथम अध्ययन "शस्त्र परिज्ञा"***

1. आचारांग का परिचयात्मक अध्ययन
2. आत्मा एवं पुनर्जन्म
3. आस्रव एवं संवर
4. षड्जीव–निकाय
5. अहिंसा

संवर्ग–2: ***सूत्रकृतांग, प्रथम श्रुतस्कन्ध का बारहवां अध्ययन***

1. सूत्रकृतांग का परिचयात्मक अध्ययन
2. अज्ञानवाद, विनयवाद, शून्यवाद, अक्रियावाद
3. जन्म–मरण की परम्परा
4. संसार का कारण
5. संसार से मुक्त कौन?

संवर्ग–3 : ***भगवती (चयनित अंश)***

1. भगवती का परिचयात्मक अध्ययन
2. नमस्कार महामंत्र का मूल स्रोत, भगवई 1/1
3. जीव और पुद्गल का संबन्ध, 1/191–199, 1/310–313
4. जीव की देह परिमितता 2/144, 7/158–159 ठाणं 4/495
5. आत्म कर्तृत्व, भगवई 1/53–54, 1/147–162 आचारांग भाष्य 5/36
6. कांक्षा मोहनीय, भगवई 1/118,119,129,140–150,169–172
7. कर्मवेदना और निर्जरा, भगवई 6/1–4,15,16, 7/74,75,82,83,88,89

संवर्ग–*4 : उत्तराध्ययन एवं दशवैकालिक, प्रथम अध्ययन*

(अ) 1. उत्तराध्ययन का परिचयात्मक अध्ययन
   2. विनय स्वरूप
   3. गुरु–शिष्य सम्बन्ध
   4. अनुशासन प्रियता एवं अनुशासनहीनता

(ब) 1. दशवैकालिक का परिचयात्मक अध्ययन
   2. धर्म का स्वरूप
   3. माधुकरी वृत्ति (श्रमण की भिक्षावृत्ति)

संवर्ग –5 : ***समयसार, प्रथम अधिकार***

1. समयसार का परिचयात्मक अध्ययन

2. आत्मा का स्वरूप एवं भेदाभेद
3. नय का स्वरूप एवं भेद– प्रभेद
4. अज्ञानी की पहचान एवं उसे समझाने की विधि
5. जीव और अजीव का स्वरूप
6. शुद्ध जीव (अलिंग ग्रहण) की अवधारणा

संदर्भ ग्रन्थ

1. आगम युग का जैनदर्शन–पं. दलसुख मालवणिया
2. उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन
3. दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन
4. आचारांग भाष्य–आचार्य महाप्रज्ञ
5. भगवती भाष्य–आचार्य महाप्रज्ञ
6. जैन साहित्य का बृहद्इतिहास–प्रथम भाग–प्रकाशक–पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी
7. The Uttaradhyana Sutra JARL Charpentier Pub.: Ajay Book Service, New Delhi &110002
8. Jaina Sturas, Heramann Jacobi, Pub.: Atlantic Publishers & Distributors, 4215/1, Ansari Road, Daryagang, New Delhi.
9. Studies in the Bhagawatisutra, J.C. Sikdar Pub.: Research Institute of Prakrit, Jainology & Ahimsa Muzafferpur (Bihar), 1964

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)–षष्ठ पत्र

अनेकान्त, नय, निक्षेप और स्याद्वाद

70+30 अंक

संवर्ग–1

1. जैन दर्शन को आ. सिद्धसेन का योगदान
2. द्रव्य, क्षेत्र काल और भाव

भगवई, 2/44–48 12/21 1–225

3. विभिन्न दृष्टान्तों द्वारा नय–निरूपण

अनुयोगद्वारसूत्र, 554, 557,715

संवर्ग–2

4. नय विचार
5. व्यंजन–पर्याय एवं अर्थ पर्याय
6. जीव–पुद्गल का भेदाभेदभाव

सन्मतिप्रकरण–प्रथम काण्ड

संवर्ग–3

7. वस्तु की सामान्य विशेषात्मकता
8. उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यात्मकता

9. अनेकान्त की व्यापकता
सन्मति प्रकरण–तृतीय काण्ड

संवर्ग–4

10. सप्तभंगी का स्वरूप एवं भेद
11. भंग सात ही क्यों?
12. प्रमेय का स्वरूपत्व और पररूपत्व

संवर्ग–5

13. स्याद्वाद एवं अनेकान्त का उद्भव और विकास
(जैनदर्शन मनन और मीमांसा पृ. 332–358)
14. नय का उद्भव और विकास
(जैनदर्शन मनन और मीमांसा पृ. 360–401)
15. निक्षेप का उद्भव, विकास और स्वरूप
(जैनदर्शन मनन और मीमांसा पृ. 643–678)

पाठ्यपुस्तकें

1. (अ) भगवई (अंगसुत्ताणि भाग–2, जैन विश्वभारती प्रकाशन, लाडनूं)
2. अनुयोगद्वारसूत्र (नवसुत्ताणि, जैन विश्व भारती, लाडनूं)
3. सन्मति तर्कप्रकरण (प्रथम एवं तृतीय काण्ड), प्रका. ज्ञानोदय ट्रस्ट, अहमदाबाद
4. सप्तभंगी तरंगिणी– आ. विमलदास–प्रका. परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास
5. जैनदर्शन मनन और मीमांसा पृ. 360–401,आचार्य महाप्रज्ञ प्रका. आदर्श साहित्य संघ, चुरू।

संदर्भ ग्रन्थ

1. The Non-absolutism of Jain Philosohy by S. Mookherjee MLBD, New Delhi.
2. Anekantavada: The Central Philosophy of Jainism, B.K. Motilal L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
3. जैन दर्शन और अनेकान्त, युवाचार्य महाप्रज्ञ, आदर्श साहित्य संघ, चुरू।
4. जैन न्याय का विकास–मुनि नथमल, जैन विद्या अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय।
5. जैन दर्शन –पं. महेन्द्र कुमार जैन, गणेश वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी।
6. दर्शन और चिन्तन, पं. सुखलाल संघवी, गुजराज विद्यासभा, अहमदाबाद।
7. स्याद्वाद और सप्तभंगी नय–भिखारीराम यादव, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान वाराणसी।
8. जैन न्याय–पं. कैलाशचन्द शास्त्री, प्रका. भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।
9. अनेकान्त और स्याद्वाद विमर्श–लेखक डॉ. रमेशचन्द जैन, प्रका. आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, ब्यावर (राजस्थान)

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)–सप्तम पत्र
जैन धर्म–दर्शन और भारतीय धर्म–दर्शन

70+30 अंक

संवर्ग–1

त्त्वमीमांसा

1. सत् का स्वरूप–जैन, बौद्ध एवं वेदान्त
2. आत्मा–जैन, वेदान्त, सांख्य, न्याय
3. पुद्गल–जैन, सांख्य, न्याय
4. मोक्ष–जैन, बौद्ध, सांख्य, वेदान्त, न्याय, गीता
5. कारण– कार्य समबन्ध –जैन, बौद्ध, सांख्य, न्याय

संवर्ग–2

आचार–मीमांसा

6. अहिंसा–जैन, बौद्ध, मीमांसा, भक्ति वेदान्त
7. अपरिग्रह–जैन, बौद्ध, योग, वेदान्त
8. तप–जैन, बौद्ध, पुराण

संवर्ग–3

9. व्रत–जैन, बौद्ध, योग
10. कर्म–जैन, बौद्ध, योग, वेदान्त
11. अविद्या–जैन, बौद्ध, वेदान्त

संवर्ग–4

ज्ञानमीमांसा

12. अनेकान्त–जैन, मीमांसा, वेदान्त, बौद्ध
13. प्रमाण–जैन, बौद्ध, न्याय, मीमांसा
14. अनुमान–जैन, बौद्ध, न्याय

संवर्ग–5

ध्यान–योग

15. ध्यान स्वरूप–जैन, बौद्ध, योग
16. ध्यान के भेद–जैन, बौद्ध, योग
17. विभिन्न ध्यान प्रणालियां –प्रेक्षाध्यान, विपश्यना, भावातीत ध्यान, सहज योग।
18. कर्म, ज्ञान, भक्ति–जैन, गीता

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय तत्त्वविद्या, पं. सुखलालजी संघवी, ज्ञानोदय ट्रस्ट, अहमदाबाद
2. आत्ममीमांसा, पं. दलसुख मालवणिया, जैन संस्कृति संशोधन मण्डल, बनारस–5

3. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. सागरमल जैन, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर
4. न्याय–विनिश्चय–विवरण (भाग–2) वादिराज सूरि, भारतीय ज्ञानपीठ काशी
5. आप्तमीमांसा तत्त्वदीपिका, प्रो. उदयचन्द जैन, गणेश वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी
6. जैन बौद्ध गीता का समाज दर्शन, डॉ. सागरमल जैन, प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर
7. प्रमाण–मीमांसा सुखलाल संघवी कृत भूमिका, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद
8. ज्ञान बिन्दु प्रकरण की भूमिका पं. सुखलाल संघवी
9. Jainism in Buddhist Literature–डॉ. भागचन्द जैन भास्कर, आलोक प्रकाशन, नागपुर

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)–अष्टम पत्र

जैन धर्म–दर्शन और भारतीयेतर धर्म–दर्शन

70+30 अंक

संवर्ग–1

प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों की तुलना

1. अरस्तु के द्रव्य एवं आकार का जैन दृष्टि से
2. डेकार्ट के द्वैतवाद का जैन द्वैतवाद से
3. लाइबनीज का चिदणुवाद और जैन आत्मवाद
4. काण्ट का नीतिशास्त्र और जैन आचारशास्त्र

संवर्ग–2

निम्न प्रत्ययों के संदर्भ में जैन दर्शन और सांकेतिक पाश्चात्य दर्शनों से तुलनाः

6. देशकाल (लाइब्नीज, काण्ट, न्यूटन, आइन्स्टीन)
7. आत्मा (डेकार्ट, ह्यूम, काण्ट)
8. आत्मा और शरीर सम्बन्ध (डेकार्ट, स्पिनोजा, लाइब्नीज)

संवर्ग–3

तुलनात्मक अध्ययन (उपर्युक्त जैसा)

9. द्रव्य (डेकार्ट, स्पिनोजा)
10. कारणता (ह्यूम, काण्ट)
11. जगत् (स्पिनोजा, लाइबनीज, प्लाटिनस, वर्कले)

संवर्ग–4

तुलनात्मक अध्ययन

12. जैन धर्म और ईसाई धर्म (ईश्वर, जगत्, अशुभ, मुक्ति–मार्ग, नीति–शास्त्र के संदर्भ में)

13. जैन धर्म और इस्लाम धर्म (ईश्वर, धार्मिक आधार, आचार–विचार के संदर्भ में)
14. जैन धर्म और पारसी धर्म (ईश्वर, अशुभ की समस्या, नीतिशास्त्र)
15. जैन धर्म और कन्फ्यूशियस धर्म (ईश्वर, मानव, नैतिक, विचार)

संवर्ग–5

आधुनिक संदर्भ में जैन धर्म–दर्शन

16. आर्थिक विषमता एवं अपरिग्रह
17. पर्यावरण एवं अहिंसा
18. लोकतंत्र एवं अनेकान्त
19. स्वस्थ–समाज–संरचना एवं अणुव्रत

संदर्भ पुस्तक

1. प्राच्य एवं पाश्चात्य दर्शन–डॉ. एन.के. देवराज
2. विश्व–धर्म–दर्शन–महामूर्ति श्री प्राणनाथ
3. जैन धर्म और जीवन मूल्य–डॉ. प्रेमसुमन जैन
4. पर्यावरण एवं जैन धर्म–डॉ. प्रेमसुमन जैन
5. अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि में–आचार्य महाप्रज्ञ
6. लोकतंत्र एवं समाज–आचार्य महाप्रज्ञ
7. महावीर का अर्थशास्त्र, आचार्य महाप्रज्ञ
8. दर्शनशास्त्र का परिचय, जार्ज थामस ह्वाइट पैट्रिक अनुवादक उमेश्वर मालवीय, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, 1973।
9. ग्रीक दर्शन–डॉ. छोटे लाल त्रिपाठी, प्राच्य विद्या संस्थान, प्रयाग इलाहाबाद।
10. पाश्चात्य दर्शन का समस्यात्मक विवेचन–डॉ. रामनाथ शर्मा (केदारनाथ रामनाथ कालेज रोड, 1978)
11. पाश्चात्य दर्शन–डॉ. बद्रीनाथ सिंह
12. विश्वप्रहेलिका–मुनि महेन्द्र कुमार, झावेरी प्रकाशन मानातंग बाम्बे 1969
13. Comparatative Religion : A History &Eric J. Sharpe
14. Philosophy of Religion & Dr. Ram Nath Sharma
15. Philosophy of Religion&John H. Hick
16. Comparative Religion &kedar Nath Tiwari
17. Historia REligionum II, Religions of the Present by C. Jouco Bleeker & Geowidengren
18. Ethical Doctrines of Jains Prof. Kamal Chand Sogani
19. The great Ideas A Synbtopican of great books of the Western world. Vols I and II pub. by Encylopedia
20. Problems of Philosophy C.W. Cunnimghan
21. History of Westorn Philosophy. B. Russell
22. Story of Philosophy, Will Durent

M.A. Jainology Comparative Religion and Philosophy

English Version

M.A. Jainology Comparative Religion and Philosophy

Guideline of Examination

There will be eight papers in this programme. It contains four papers in M.A. Previous and Four Papers in M.A. Final. All papers are compulsory. Each and every paper contains 30 marks for sesional paper and 70 marks for annual examination.

M.A. (Previous) Papers	M.M.	Duration
1. Jain History, Culture, Literature and Art	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
2. Jain Metaphysics and Ethics	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
3. Jain Theory of Dhyāna-yoga and Karma	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
3. Jain Epistemology and Nyāya	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
Total	**32 Credits**	**400**

M.A. (Final) Papers	M.M.	Duration
1. Jain Agama	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
2. Anekanta, Naya, Nikshepa and Syadavada	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
3. Jain Religion Philosophy and Indian Philosophy	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
4. Jain Religion Philosophy and Non- Indian Philosophy	2+6=8 Credits	30+70 3Hours
Total	32 Credits	400

SCHEME OF EXAMINATIONS (PG)

- PASS CRITERIA: Pass marks - 36% in each theory course & 50% in Practical; and 40% in aggregate
  Promoted - 1. Passing 50% papers of course 2. Not securing Aggregate 40% marks.
- Calculation of Division: First Division – 60% and above; Second Division - 50% to <60%; Pass – 40% to <50%

M.A. Previous Year
PAPER- I
History, Culture and Literature

Marks: 70+30

Course Contents in Units:

Block-I History of Jainism: Jainism in pre-historical age from Lord Risabha to Lord Aristanemi; Jainism in historical age from Lord Pārsva to Lord Mahavira; Lord Mahavira"s contemporary religious sects; Jainism after Lord Mahavira: Tradition of Ganadharas; Jain sects and the great Acāryās; Jain religion in different regions of India and abroad.

Block-II Jain Culture: Peculiarity of Jain culture; Non-violent way of life; Jain places of pilgrimage; Rites and rituals; Jain festivals.

Block-III Jain Art: Art of Writing and other arts; Characteristics of Jain paintings and sculpture; Jain mounds (*stūpa*); caves and temples.

Block-IV Jain Literature: Outlines of the primary and secondary canons; Explanatory literature on the canonical texts.

Block-V Other Literature: Philosophical literature, Puraṇās and Chāritra literature, Literature of poetry and prose; Literature of Yoga.

REFERENCE BOOKS

1. Ashim Kumar Roy, A History of the Jains, Gitanjali publishing House, New Delhi.
2. D.C. Sircar, Religion and Culture of the Jainas, University of Calcutta.
3. Dr. Jyoti Prasad Jain, The Jaina Sources of the History of Ancient India, Munshiram Manoharlal Delhi-6
4. Dr. Jyoti Prasad Jain, Religion and Culture of Jainas, Bhartiya Jnanapith Publication, Delhi.
5. Narendra Nath Bhattacharya, Jain Philosophy: Historical outlines, Munshiram Manoharlal, Delhi.
6. W. Schubring, Doctrine of Jainas, MLBD, Delhi.
7. H.R. Kapadia, History of Canonical Literature of Jaina, Bombay.

8. M. Winternitz, Outlines of Indian Literature, Vol.-II, tr. by V. Shrinivas Sharma, Motilal Banarsidas, Delhi.
9. Acharya Mahaprajna, Jaina Darsana: Manana aura Mīmāmsā, Adarsa Sahitya Sangha, Curu, 3rd edn. 1977.
10. Acharya Mahaprajna, Samskriti ke do Pravāha, Jain Vishwa Bharati, Ladnun.
11. Dr. Hiralal Jain, Bharatiya Samskriti me Jain Dharma kā Yogadāna, Madhya Pradesh Sasana Sahitya Akademy, Bhopal.
12. Jain Sāhaitya kā Brihata Itihāsa, Prasavanath Vidhyasharam Sodha Samsthana, Varanasi, (part-2), 2nd edn. 1989.
13. Prof. Jagdishchandra Jain, Prakrit Sāhitya kā Itihāsa, Choukhamba Vidyabhavana, Varanasi, 2nd edn. 1985.
14. Dr. Bhagchanda Bhaskar, Jain Darśana aura Samskriti kā Itihāsa, Nagapura Vishvavidyalaya.
15. Acharya Hastimala, Jain Dharma kā Maulika Itihāsa, Jain Itihasa Samati, Jaipur.
16. Sadhvi Samghamitra, Jain Dharma ke Prabhāvaka Acārya, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
17. Acharya Mahaprajna, Shraman Mahavir, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
18. Pt. Kailasachanda Sastri, Jain Dharma, Bharatvarsiya Digamber Jain Samgh Caurasi, Mathura.
19. Dr. Jyotiprasada Jain, Bhāratīya Itihasa: eka Drsti, Bhartiya Gyanapitha.
20. Muni Nathmal, Uttrādhayana: Eka Samīkhatmaka Adhyayana, Jain Swetambar Terapanth Mahasabha, Kolkatta.
21. Acarya Tulsi and Muni Nathmal, Atīta kā Anāvaraṇa, Bhartiya Gyanapitha, Delhi, 1969.
22. Srichanada Rampuriya, Aristhanemi and Vasudeva Krishṇa, Terapanth Mahasabha, Kolkatta.
23. Pt. Padmchandra Sastri, Tirthankar Mahavir, Jain Vidhya Samsthan, Mahavirji, Rajasthan.
25. Dr. Rameshachand Jain, Jain Parva, Jain Vidhya Samsthan, Mahavirji, Rajasthan.
26. Kailashchandra Shastri, Jaina Sāhitya Kā Itihāsa, Ganeshvarni Sodha Samsthana, Varanasi, 1963.

PAPER-II
Jain Metaphysics and Ethics

Marks: 70+30

Course Contents in Units:

Block-I Nature of Reality; Substance, Quality; Mode Bhagvaī 18/134-142, Pancāstikāya gathā 4-22, Tattvārthsūtra Sutra with bhasya 5/1-6, Dravyānuyoga tarkana 2/1, 9/1-29, Jain Siddhanta Dipika 1/1-3. Identity-cum-difference of substance, quality and mode Pancāstikāya gatha 12,13, Dravyānuyoga Tarkana, 2/2-3, 3/1-10.

Block-II Nature of Universe Jain Siddhanta Dipika (!st Lusture 1-9), Jain Darśana Manana aura Mimānsā p. 214-233. Medium of motion and medium of rest Bhagavi 2/125,130-135, Pancāstikāya gatha 83-89, Tattvārthsūtra with Bhasya 5/17, **Block-VIII** Ethics of monk: Five great vows (mahāvrata);

Dravanuyoga Tarkana 10/4-7, Jain Siddhanta Dipika), 5, 32, Jain Darsana Manana aura Mimānsā p. 188-191.

Block-III Akāśastikāya (sapce) Bhagvaī 2/127, Pancāstikāya gāthā 90-96,Tattvārthsūtra Sūtra with bhāsya, 5/18, Dravyā nuyoga Tarkanā 10/8-9, Jain Siddhānta Dipika 1/6-13.Kala(time). Pancāstikāya gāthā 100-102, Dravyā nuyoga Tarkanā 10/10-19, Tattvārthsūtra Sūtra with bhāsya, 5/38-39, Jain Siddhānta Dipikā 1/6-13.

Block-IV The idea of self in Jainism; Six types of living beings Bhagvaī 2/128, Pancāstikāya gāthā, 30-32, Tattvārthsūtra Sūtra with bhāsya, 5/12, Darvyānuyoga Tarkanā 1/20,Jain Siddhānta Dipikā 1/34.3/1-18.

Block-V Theory of Matter in Jainism: The concept of Pudgala (Matter) Bhagvaī 2/129, Pancāstikāya gāthā 74-76, Tattvārthsūtra Sūtra with bhāsya 5/12-20,23-26,Jain Siddhānta Dipikā 1/14-21, 33, Atom its nature and the process of fusion & fission, Pancāstikāya gāthā 77-78, Jain Darsana Manana aura Mimansa p. 199-212.

Block-VI Concept of Jain Ethics: Origin and development of Jain ethical doctrines; The Metaphysical base of the Jain Ethics and its peculiarity

Block-VII Ethics of House-holder: Five small vows (Aṇuvrata); Three qualifying vows (Guṇavrata); Four practical vows (Sikṣā Vrata); Eleven kinds of intensive discipline (pratima) Uvāsgadasāo, Tattvārthsūtra with Bhasya 7/1.32, Ratnakaranda shrāvakacāra, Srāvakasambodba; Compassion and its importance, Anukampa ki caupai-30, Bhikshu Grantha Ratnakara.

Three kinds of self-protection (gupti); Five kinds of self-compartment (samiti); Six essentials (āvaśyaka); Twenty two kinds of difficulties (Pariṣaha), Acārānga Divitya Shruta-skandha, Daśvaikālika 4/11-17, Mulacara 1/10-36, Tattvārthsūtra 9/1-46, Acārābodha.

Block-IX Organization of Jain religious order, Following portion of Acārānga bhāsya of Acārya Mahaprajñā- Acārya 5/89, sādhu 3/5, daily routine 4/40-43, food 2/113, 8/36, desire to live 2/63,64, sangha 5/107-110.

Block-X Nine Categories of Truth (Nau Tattva), Bhagavī 1/200-201, 7/10-15. Uttradhyayana 36/55-56, Tattvārthsūtra 10/1-7, Nav tattva: Adhunika sandrbha me, Emancipation Penance (Samlekhanā), Acārānga 6/113, 8/105-110.

Texts: (a)

1. Bhagavī Bhāsya, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun.
2. Tattvarthsutra with Bhasya, Parmashruta Prabhavaka Mandala, Agasa.
3. Dravyānuyogatarkaṇā,Shrimad Bhojaka, Srimad Rajchandra Parmasruta Prabhavaka Mandala, Agasa.
4. Jain Siddhanta Dipikā, Acārya Tulsi, eng. translated by S. Mookherjee, ed. Nathmala Tatia, Muni Mahendra Kumar,JVBI, Ladnun.
5. Jaina Darsana: Manana aura Mimāmsā, Acharya Mahaprajna, Adarsa Sahitya Sangha, Curu. (b)
6. Uvāsagadasāo, Angasuttāni part 3, ed. Yuvacarya Mahaprajna, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
7. Mūlācārā (Ch. 1), Acarya Vattakera, Bhartiya Jnanpitha Publication, New Delhi, 1944, 2nd edn. 1992.
8. Acarya Tulsi, Sravaka Sambodha, Adarsa Sahitya Samgha, Curu.
9. Acarya Mahaprajna, Acaranga Bhasya, Jain Vishva Bharati, Ladnun, 1st edn. 1994.

10. Dasvaikālika, ed. Acarya Mahaprajna, Jain Vishva Bharati, Ladnun, 2nd edn. 1974.
11. Ratnakarnda srāvakācāra, Viraseva Mandira Trust Praksana, Varansai.
12. Acārya Tulsi, Acara Bodha, Adarsa Sahitya Samgha, Curu.
13. Uttarādhayayana, ed. Acarya Mahaprajna, Jain Vishva Bharati, Ladnun, 2nd edn. 1992.
14. Acarya Mahaprajna, Nava Tattva: Adhunika Sandrabha me, Jain Vishva Bharati, Ladnun.

REFERENCE BOOKS :

GROUP A

1. Acharya Shri Tulsi, Illuminator of Jain Tenets, eng. translated by S. Mookherjee, JVBI, Ladnun.
2. H.S. Bhattacharya, Reals in the Jain Metaphysics, Seth Shantidas Kheisy Charitable Trust, Bombay.
3. J.S. Zaveri, Micro Cosmology: Atom in Jain Philosophy and Modern Science, JVBI, Ladnun.
4. G.R. Jain, Cosmology: Old and New, Bharatiya Jnanapitha Publication, New Delhi.
5. Y. Padmarajah, A Comparative Study of the Jain Theories of Reality and Knowledge, MLBD, Delhi.
6. Dr. Nathmal Tatia, That Which Is: Tattvārtha Sūtra, Hosper Calline, London, 1994.
7. J.C. Sikdar, Concept of Matter in Jain Philosophy, PVRI, Varanasi.
8. Pañcāstikaya, English tr. by Prof. Chakravarti, Bharatiya Jnanpitha, New Delhi.
9. Bṛhad Dravyasaṅgraha of Nemichandra, ed. S.C. Ghaosal, Motilal Banarsidas, Delhi, 1989. (English translation).

GROUP B

10. Dr. Tatia and Muni Mahendra Kumar, Aspects of Jain Monasticism, JVBI, Ladnun.
11. K.C. Sogani, Ethical Doctrines of the Jainas, Jain Samskriti Samrakshak Sangh, Sangli, Solapur.
12. Dr. Dayanand Bhargava, Jain Ethics, MLBD, Delhi.
13. Jain Yoga, R. William, Oxford University Press, New York, Toronto, 1960.

KHANDA-A

15. Muni Mahendra kumar, Viśva Prahelikā, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
16. Prof. Mahendra kumar, Jain Darsana, Ganeshvarni Sodha Samsthan, Varanasi.
17. Muni Mahendra kumar and Jethalal Zaveri, Jain Darśana aura Vigyān, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
18. Dr. Sukhalal Samghvi, Darsana aura Chintana.

KHANDA-B

19. Acārya Mahaprajna, Ahimsa Tattva Daśana, Adarsa Sahitya Samgha, Curu.
20. Devandra Muni Sastri, Jain Acāra: Siddhānta aura Svarupa, Sri Taraka Guru Jain Granthalaya Praksana, Udaipur.
21. Dr. Sagarmal Jain, Jain, Bauddha aura Gitā ke Acāra Darśana kā Tulnatmaka Adhyayana, Prakrita Bharati, Jaipur.
22. Acarya Bhikshu, Navapadartha Samgrha, ed. Srichand Rampuriya, Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha, Kolkotta..
23. Acharya Mahaprajna, Jaina Darsana: Manana aura Mimāmsa, Adarsa Sahitya Sangha, Curu, 3rd edn. 1977.
24. Ganadhipati Tulsi, Gristha ko bhi Adhikara hai Dharma Karne kā, Adarsa Sahitya Samgha, Curu.

PAPER-III

Jain Theory of Dhyāna-yoga and Karma

Course Contents in Units: Marks: 70+30

Block-I Jain Yoga: Nature of Jain Yoga; Yoga dristi of Haribhadra, Nature and types of meditation, Thanam 4/60-726, Sālamban Dhyana or Dharaṇa; (pindastha and parthivi etc.) Manonuśāsanam.

Block-II Preksha Meditation; Preksha meditation and its scriptural sources; Twelve types of contemplation Tattvārthsūtra 9/14 with commentary Sarvārthsiddhi; Nature of aural coloration (Leśyā) and its division Uttradhyayana 34th chapter.

Block-III Pātanjal Yoga Sūtra, pada 1-2, Nature of Yoga, Sampragyāt Samādhi and Asampragyata Samādhi. Kriyā yoga, Astānga yoga,

Visuddhimaggo, 3rd chapter (samādhi),Concept and types of Samādhi, dasa palibodha and carya, Subject of meditation (karmasthāna).

Block-IV Tattvārthsūtra with bhāsya, 8 Pannavanā 23/1-59; Karma Theory: Nature of karma; Bondage and its process; Division and subdivision of karma; Materiality of karma and Ten states of karma; Mutual relation between soul and karma; Process of liberation.

Block-V Karmic theory and spiritual practice, Kārmic theory in the light of Psychology; Kārma theory and rebirth; Niyativāda etc. five aspects, States of Spiritual development

Texts:

1. Acārya Mahaprajna, Acārānga Bhāsya, Jain Vishva Bharati Samsthan, Ladnun, 1st edn. 1994.
2. Pātanjal Yoga Sutra, Chap. 1-2.
3. Visuddhimaggo, 3rd Adhayaya (samādhi).
4. Acarya Umasvati, Tattvarth Sutra with bhāsya, 8/1-25, Parmasruta Prabhavaka Mandala, Agasa.
5. Acarya Tulsi, Jain Siddhanta Dipikā, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
6. Pannavana, 23/1-59, (uvanga suttāṇi, part-2), ed. Acarya Mahaprajna, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
7. Jain Darsana Manana Aura Mimansa, p. 301-330

REFERENCE BOOKS

8. Dr. Nathmal Tatia, Jain Meditation, Chitta Samadhi, JVB, 1986.
9. J.S. Zaveri and Muni Mahendra Kumar, Neuroscience and Karma, JVB, Ladnun, 1972.
10. H.V. Glassanapp, The Doctrine of Karma in Jain Philosophy, Reprint PVRI, 1992.
11. Muni Nathamal, Mahavir ki Sadhana ka Rahsya, Adarsa Sahitya Samgha, Curu, 2000.
12. Yuvacarya Mahaprajna, Jain Yoga, Adarsa Sahitya Samgha, Curu, 1997.
13. Acharya Tulsi, Preksha Anupreksha, Adarsa Sahitya Samgha, Curu, 1st edn. 1983.
14. Arhatdas, Jain Yoga, P.V.R.I., Varanasi.

15. Acarya Mahapragya, Preksādhyāna: Siddhānt aura Prayoga, ed. Muni Kishanlal, Jain Vishva Bharati, Ladnun, (ist edn, 1990), 2nd edn. 1992.
16. Yuvacarya Mahapragya, Amūrta Chintana, Adarsa Sahitya Samgha, Curu, 3rd edn. 1992.
17. Yuvacarya Mahapragya, Abhāmaṇḍala, Jain Vishva Bharati, Ladnun, 2004.
18. Acarya Narendradeva, Bauddha Dharma-darśana, Bihar Rastra Bhasa Parishad, Patna.
19. Dr. Sagarmal Jain, Jain Karma Sidhhānt kā Tulnātmāka Adhyayana, Pakrit Bharati, Jaipur.
21. Dr. Ravindranath Mishra, Jain Karma Siddhānta ka Udbhav aur Vikasa, P.V.R.I.,Varanasi, 1993
22. Dr.Ratnalal Jain, Jain Karma: Siddhanta aur Manovigyan.1996.
23. Acarya Mahaprajna, Karmavāda, Adarsa Sahitya Samgha, Curu, 1986.
24. Hemchandracarya, Yogaśāstra (Svopagya Vivrana Sahit), Jain Dharma Pracharka Sabha, Bhavnagar.
25. Dhyānaśataka, Jinabhadra gani, Oriental Research Trust, Madras, 1971.

PAPER-IV
Jain Epistemology and Nyāya

Course Contents in Units: Marks: 70+30

Block-I Theory of Knowledge: Origin and development of the concept of knowledge; Cognition and cognizable object, nature and varieties of Darśana.

Block-II Indirect perception: Perceptual cognition, Verbal knowledge and its varieties; Senses and mind.

Block-III Direct Perception: Avadhijñāna (clairvoyance), Nature of Manah-paryava jñāna (mind-reading knowledge); Kevalajñā (pure and perfect knowledge/omniscience).

Block-IV Jain Logic: Origin and development of Jain logic; Contribution of Jain Acāryās in the development of Indian logic; Characteristics of Jain logic; Immediate valid cognition.

Block-V Mediate Valid Cognition: Five kinds of mediate valid cognition—Recollection, Recognition, Inductive Reasoning, Verbal testimony, Inference, Vyāpti, Nature of hetu.

Texts:

1. Namdi,2-80, (Navsuttani), ed. Acarya Mahaprajna, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
2. Introduction to Jñānabindu of Yasovijayaji, p. 13-18,20-25,40-42, Singhi Jain Gyana Pitha, Ahmedabad.
3. Pramāṇamīmāmsā of Hemachandracarya, Sarasvati Pustaka Bhandar, Ahmedabad, 1939.

REFERENCE BOOKS

1. Nathmal Tatia, Studies in Jain Philosophy, PVRI, Varanasi.
2. Dr. Ramjee Singh, The Jain Concept of Omniscience, L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
3. I.C. Shastri, Jain Epistemology, PVRI, Varanasi. 1990.
4. Pt. Kailaschanda Sastri, Jain Nyāya (part-2), Bhartiya Gyanapith, Delhi, 1st edn. 1989.
5. Pt. Mahendrakumar, Jain Darsana, Ganeshvarni Jain Granthmala, Banarasa,1966.
6. Muni Nathmal, Jain Nyāya kā Vikāsa, Rajasthan Vishvavidhylaya, Jaipur.
7. Pt. Dalsukha Malavaniya, Agama Yuga kā Jain Darsana, Pakrit Bharati, Jaipur, 2nd edn. 1990.
8. Acarya Kundkunda, Pravacanasara, Pamsruta Prabhavaka Mandal, Agasa.
9. Dr. Darbarilal Kothari, Jain Nyāya ki Bhumikā, Jain Vidhya Samsthan, Sri Digambar Jain Atisaya Kestra, Mahavirji.

M.A. Final Year
PAPER-V : Jain Agama

Course Contents in Units: Marks: 70+30

Block-I Acaranga, 1st Chapter, 'Sastra Parigyā", Acārānga kā paricayātmaka adhyayana, soul and rebirth, āsrava (influx) and samvara (stopping of), six types of jiva, non-violence.

Block-II Sūtrakritānga, 12th chapter of 1st shruta-skandha, Sūtrakritānga kā pricāyātmaka adhyayana, Agyānvāda, Vinayavada, Shūnyavād, Akriyāvāda, Tradition of birth and death, Cause of World, Who is liberated from World

Block-III Bhagwatī (Selected Part) Bhagavati ka paricayātmaka adhyayana, Namaskār Mahāmantra ka mulshrot, Bhagwai 1/1, relation of soul and body, Bhagavi 1/191-199, 1/310-313, jiva ki dehparimitata, Bhagavi 2/144, 7/158-159, Thanam 4/495, ātma kartitva, Bhagavi 1/53-54, 1/147—162, Acārānga Bhasya, 5/36, kanksha mohaniya, Bhagavi 1/118,119,129,140-150, 169-172, karmavednā and nirjarā (sheding off), Bhagavī 6/1-4, 15-16,7/74,75,82,83,88,89.

Block-IV(a) Uttradhyayana1st chapter, Uttradhyayana ka paricyātmaka adhyayana, nature of vinaya, relation of guru-śishya, anushāsana priyatā and anushasana hinta.

(b) Daśvaikālika 1st chapter and Satkhandāgama p. 1-52, Daśvaikalika kā paricayātmaka adhyayana, nature of dharma, madhukari vriti.

Block-V Samaysar, Pratham Adhikār, Samayāsara Ka Parichayātmak Adhyayan, Atma ka Swarūp and Bhedābheda, Naya Ka Swarūp and Bheda and Prabheda, Agyani Ki Pahchan and Use Samjhane Ki Vidhi, Jiva and Ajiva Kā Swarūp, Shudha Jiva (Aling Grahan) Ki Avdharṇa

REFERENCE BOOKS

1. Dr. Dalsukha Malvaniya, Agam yuga kā Jain Darsan, Pakrit Bharati, Jaipur, 2nd edn. 1990.
2. Acārya Mahapragya, Uttradhyayana:Eka Samīksātmaka Adhyayana, Jain Vishva Bharati , Ladnun, 1968.
3. Acārya Mahapragya, Daśavaikālika:Eka Samīksātmaka Adhyayana, Jain Vishva Bharati , Ladnun, V.S. 2023.
4. Acārya Mahaprajna, Acārāmga Bhāsya, Jain Vishva Bharati, Ladnun,1994.

5. Acārya Mahaprajna,Bhagavaī Bhāsya,Jain Vishva Bharati, Ladnun.
6. Ed. Acārya Mahaprajna, Sūyagado, JVBI, Ladnun, 1984.
7. Jain Sāhitya ka Brihad Itihāsa, Parsvanath Vidhyashram, Varanasi.
8. The Uttarādhyana Sutra, JARL Charpentier, Ajay Book Service, New Delhi.
9. Hermann Jacobi, Jaina Sūtrās, Atlantic Publishers & Distributors, 4215/1, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi.
10. J.C. Sikdar, Studies in the Bhagawatī Sūtra, Research Institute of Prakrit, Jainology &Ahimsa, Vaishali, Muzafferpur (Bihar), 1964.

PAPER-VI

Anekanta, Naya, Nikshepa and Syadavada

Marks: 70+30

Course Contents in Units:

Block-I Contribution of Acārya Siddhasena to Jain Philosophy, Dravya, keśtra, kāla, bhāva, Bhagvaī, 2/44-48, 12/21, 1-225, Explaination of Naya through various examples , Anuyogadvarasutra 554, 557, 715.

Block II Naya vicāra, vyanjana paryaya and artha paryaya, jiva-pudgala ka bhedabeda, Sanmatiprakarana 1st kanda.

Block-III Vastu ki samanya viśeşatmakata, utpada (origination), vyaya (cessation), dhrauvyatmakata (persistence), widespreadedness of anekanta, Sanmatiprakaran 3rd kanda.

Block-IV Nature and types of saptbhangi, Why only seven bhanga, svarūpatva and pararūpatva.

Block-VI Origin and development of syadvada and anekanta ,(Jain Darsana Manana aura Mīmāmsa p. 332-358), Origin and development of naya, (Jain Darsana Manana aura Mīmāmsa p.360-401) Origin, development and nature of nikshepa, (Jain Darsana Manana aura Mīmāmsa p.643-678).

Texts:

1. Bhagavi, Angasuttāṇi,Part-2, Jain Vishva Bharati, Ladnun.
2. Anuyogadvarasūtra, Navasuttaṇi, Jain Vishva Bharati, Ladnun.

3. Sanmati Tarkaprakaraṇā, 1st and 3rd kanda., Gyanodaya Trust, Ahmedabad.
4. Sapabhangi Trangini, Acarya Vimaldas, Pramasruta Prabhavaka Mandala, Agasa.
5. Jain Darsana Manana aura Mīmāmsa, p. 360-401, Acarya Mahaprjna, Adarsa Sahitya Sangha, Curu.

REFERENCE BOOKS

1. S. Mookherjee, The Non-absolutism of Jain Philosophy, MLBD, New Delhi.
2. Anekantavada: The Central Philosophy of Jainism, B.K. Motilal L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
3. Yuvacarya Mahapragya, Jain Darsana aura Anekanta, Adarsa Sahitya Sangha, Curu.
4. Muni Nathmal, Jain Nyaya kā Vikasa, Jain Vidhya Anushilana Kendra, Rajasthana Vishvavidhyalaya.
5. Pt. Mahendra Kumar Jain, Jain Darsana, Ganesha Varni Sodha Sansthana, Varanasi.
6. Pt. Sukhalal Singhvi, Darsana aura Chintana, Gujarata Vidhyasabha, Ahmedabad.
7. Pt. Udayachanda Jain, AptamīmamsāTattvadipika, Ganesh Varni Sodha Sansthana, Varanasi.
8. Bhikharilal Yadava, Syādvāda aura Saptabhangi, PVSI, Varanasi.
9. Pt. Kailashachanda Sastri, Jain Nyaya, Bhartiya Gyanapitha, Kasi.
10. Dr. Rameshchand Jain, Anekanta aura Syādvāda Vimarsha, Acarya Gyanasagar Vagartha Vimarsha Kendra, Byavara,.

PAPER-VII
Jian Religion Philosophy and Indian Philosophy

Marks: 70+30

Course Contents in Units:

Block-I Tattva Mīmāmsa : Nature of Sata- Jain, Bauddha and Vedānta, Soul-Jain, Vedanata, Sānkhya, Nyaya, Pudgala- Jain, Sāmkhya, Nyāya, Mokhsa- Jain, Bauddha, Samkhya, Vedanta, Nyāya, Geeta, Relation of cause and effect- Jain, Bauddha, Sāmkahya, Nyaya.

Block-II Acāra Mīmāmsa:Non-violence- Jain, Bauddha, Mīmāmsa, Bhakti Vedanta, Non- possession- Jain, Buddha, Yoga, Vedanta, Penence- Jain, Bauddha, Purana.

Block-III Vrata-Jain, Bauddha, Yoga, Karma- Jain, Bauddha, Yoga, Vedanta, Avidya- Jain, Bauddha, Vedanta.

Block-IV Gyana Mīmāmsa: Anekanta- Jain, Mīmāmsa, Vedānta, Bauddha, Pramana- Jain, Bauddha, Nyaya, Mimansa, Anumana- Jain, Buddha, Nyāya.

Block-V Dhyana-yoga: Nature of Meditation- Jain, Bauddha, Yoga, Types of Meditation- Jain, Buddha, Yoga, Various Fields of Meditation-Preksha dhyāna, Vipasyana, Bhāvātita dhyāna, sahaja yoga, Karma, Knowledge, Bhakti- Jain, Geeta.

REFERENCE BOOKS

1. Pt. Sukhalal Singhi, Bhartiya Tattvavidhya, Gyanodaya trust, Ahmedabada.
2. Pt. Dalsukha Malavaniya, Atmamīmāmsa, Jain Sanskriti Sansodhana Mandala, Banarasa.
3. Dr. Sagarmala Jain, Jain, Bauddh aura Geeta ke Acāra Darśana kā Tulnatmaka Adhyayana, Rajasthana Prakrita Bharati Sansthana, Jaipur.
4. Vadideva Suri, Nyaya Vinishya, part-2, Bharatiya Gyanapitha, Kasi.
5. Pr. Udayachanda Jain, Aptamimansa Tattvadipika, Ganesha Varni Sodha Sansthana, Varanasi.
6. Dr. Sagarmala Jain, Jain, Bauddh aura Geetā ke Samāja Darśana, Prakrita Bharati Samsthan, Jaipur.
7. Pramāna Mīmāmsa (introduction of Sukhalal Sainghi), Sarasvati Pustaka Bhandara, Ahmedabad.
8. Gyā na Bindu Prakarana.
9. Dr. Bhagchanda Jain Bhaskara, Jainism in Buddhist Literature, Aloka Prakasana, Nagpur.

PAPER-VIII
Jian Religion Philosophy and Non- Indian Philosophy

Course Contents in Texts: **Marks: 70+30**

Block I Comparison of Jain with Substance and Mode of Aristotle, Dualism of Jain with Descartes, Jain Soul with Leibnitz Monads, Jain Ethics with Ethics of Kant and Moore, Jain Ethics with other Ethics.

Block II Space and Time (Leibnitz, Kant, Newton, Einstien), Soul (Descarte, Hume, Kant), Relation of soul and body (Descarte, Spinoza, Leibnitz)

Block III Substance (Descarte, Spinoza), Cause (Hume, Kant), World (Spinoza, Leibnitz, Platinus, Berkley)

Block IV Jain Religion and Christian Religion (God, World, Demerit, Liberation, Ethics), Jain Religion and Muslim Religion (God, Religious base, Ethics), Jain Religion and Pārsi Religion (God, Problem of Demerit, Ethics), Jain Religion and Confucious Religion (God , Man, Ethics)

Block V Jainism in Present Age: Economical Imbalance and Non-possession, Environment and Non-violence, Democracy and Non-absolutism, Healthy Society and Anuvrat.

REFERENCE BOOKS

1. Das Guljarilal Prem, Viśhva Dharma Darśana, Sri Parnath Misson, 1997.
2. Dr. Premsuman Jain, Jain Dharma aur Jivan Mulya, Shingi Prakashan, Jaipur, 1990.
3. Dr. Premsuman Jain, Paryā varna evam Jain Dharma, Akhil Bhartiya Jain Vidvata Parishad, Jaipur, 1986.
4. Acarya Mahaprajna, Lokatantra evam Samaja, Jain Vishva Bharati Prakshana, Ladnun, 3rd edn. 1996.
5. Acarya Mahaprajana, Anuvrata Ki Darsnika Pristhabhumi,
6. Acarya Mahaprajna, Mahavira ka Arthśāstra.
7. Chotalal Tripathi, Greek Darśana, Pracya vidhya Sansthana, Prayaga, Ilabad.

8. Ramnatha Sharma, Paścatya Darśana Samaiksātmaka Vivechan.
9. Dr. Badrinath Singh, Pascatya Dasana.
10. Muni Mahendrakumar, Vishva Praheliká , Zaveri Prkasana, Manatanga, Mumbai, 1969.
11. Eric J. Sharpe, Comparative Religion : A History, Gernald Duckworth and Company, London, 2nd edn. 1986.
12. Dr. Ram Nath Sharma, Philosophy of Religion, Kedarnath Ramnath, Meerut, 1993-94, 3rd rev. edn.
13. John H. Hick, Philosophy of Religion, Prentice Hall International, London, 1963.
14. Kaidar Nath Tiwari, Comparative Religion, Motilal Banrsidas Publishers, Delhi, 1983.
15. C. Jouco Bleeker & Geowidengren, Historia Religionum II, Religions of the Present.
16. Prof. Kamal Chand Sogani, Ethical Doctrines of Jains, Lalchand Hirachand Doshi, 1967.
17. The Great Ideas: A Syntopican of great books of the western world. Vol. I and II, Pub. by Encyclopedia Britannica, Chicago.
18. Encyclopedia of Religion, J.G.R. Forlong cosmo Publication, (vol 1-3), New Delhi, 2005.
19. C. W. Cunnimghan, Problems of Philosophy.
20. B. Russell, History of Western Philosophy.
21. Will Durent, Story of Philosophy.

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं–341306 (राजस्थान)

Directorate of Distance Education
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun-341 306 (Rajasthan)

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम
SYLLABUS (Two Years)

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म–दर्शन

M.A. Jainology Comparative Religion and Philosophy

संस्करण–2019–20 **Edition - 2019-20**

Directorate of Distance Education

Jain Vishva Bharati Institute

Ladnun-341 306 (Rajasthan)

www.jvbi.ac.in